

75. D. निचित pro रचित.

76. W B H. केशरस्तत्र; lectione, quam recepi e D., limatior fit junctura. - W. etiam hic scribit कुरुवक.

77. तत्तन्मध्ये H. - D. नडा. - B. नर्तितैः W. inversis vocabulis कान्तया नर्तितो मे.

78. D. लक्षणीयं et क्षामच्छायं.

79. D. शीघ्रसंपातहेतोः.

80. H. बिम्बाधरोष्ठी. - B W. आयैव.

81. Laudatur Sâh. Darp. p. 52. sine varia lectione.

82. H. न्यूनं. - D. बहूनां pro प्रियायाः. - H. उपसरणा.

83. W. पुरे pro पुरा.

85. H. विरहदिवस^० male. - Pro स्थापितस्य D. प्रस्थितस्य quod placet; mox idem दत्त pro मुक्त. - H. हृदयविहित. - W B H. आसादयन्ती; in lectione recepta major inest *εμπασις*.

86-89. Has strophas ita transponit D: 89, 86, 87. a.b. 88. c. d. 88. a. b. 87. c. d., at strophas 86. cum praecedenti arcte cohaeret.

86. D. खेदयेद्विप्रयोगः. - Post eam stropham has duas inserit H., quae cujus generis sint jam supra ad v. 18. significavi :

सिग्धाः सख्यः कथमपि दिवा तां न मोक्षयन्ति तन्वी
मेकप्रख्या भवति हि जगत्पङ्क्तानां प्रवृत्तिः ।
स त्वं रात्रौ जलद शयनासन्नवातायनस्यः
कान्तां सुप्ते सति परिजने वीतनिद्रामुपेयाः ॥
अन्वेष्टव्यामवनिशयने संनिकीर्णैकपाश्र्वा
तत्पर्यङ्कप्रगलितलवैश्विन्नहारैरिवाश्रैः ।
भूयो भूयः कठिनविषमां सादयन्तीं कपोला
दामोक्तव्यामयमितनखेनैकवेणीं करेणा ॥